thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853115
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 11 अंक : 8 रोहतक, 21 जुलाई, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

महर्षि का वास्तविक जीवन-दर्शन

❑ खुशहालचन्द्र आर्य

सदियों तक इतिहास न समझ सकेगा।
तुम मानव थे या मानवता का महाकाव्य॥

यह लेख मैंने आदरणीय डॉ० महेश जी विद्यालंकार द्वारा लिखित **'ऋषि दयानन्द की अमरगाथा'** शीर्षक पुस्तक से उद्धृत किया है। इस पुस्तक में महेश जी ने महर्षि के गुण, कर्म, स्वभाव पर इतनी सुन्दर विवेचना की है, जिसको पढ़कर अति प्रसन्नता तो होती ही है, साथ ही महर्षि के व्यक्तित्व व कृतित्व की भी पूरी जानकारी हो जाती है। इस पुस्तक को पढ़कर आर्यसमाजी तो अति हर्षित होता ही है, यदि इसको कोई विरोधी विचार रखने वाला व्यक्ति भी पढ़ लेवे तो वह इतना अधिक आकर्षित होगा कि वह बार-बार इस पुस्तक को पढ़ने की इच्छा करेगा। यह पुस्तक केवल 26 पृष्ठों की है, मेरी इच्छा होती है कि यह पूरी पुस्तक ही पांच-छः लेखों में उद्धृत कर दूं, पर दो-तीन लेख तो मैं अवश्य लिखूंगा जिससे सुधी पाठकगण इसकी सरसता का आनन्द उठा सकें। प्रथम लेख इसी भाँति है—

सदियों के बाद इस धरती को ऋषि दयानन्द के रूप में ऐसा महापुरुष मिला जिसने जीवन तो उनसठ वर्ष का प्राप्त किया, परन्तु कार्यकाल का जीवन केवल 10 वर्ष का ही रहा, इतने अल्प समय में ही उन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व के आलोक में संसार को चमत्कृत कर दिया। सोई हुई मानव जाति को जीवन जीने का सच्चा, सीधा तथा सरल मार्ग दिखा गया। प्रत्येक क्षेत्र में, ऋषि ने वेदसम्मत, सत्य, वैज्ञानिक, व्यावहारिक तथा उपयोगी मार्गदर्शन दिया। उनका संकल्प था—**'ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि'** इस व्रत को उन्होंने जीवनभर निभाया। उन्होंने **'सत्यमेव जयते'** अन्त में सत्य की ही विजय होती है, इस वाकय को जीवित रखा। उन्होंने सत्य की रक्षा के लिए जहर, ईंट, पत्थर, गालियाँ न जाने क्या-क्या जुल्म नहीं सहे, मगर सत्यपथ से कभी विचलित नहीं हुए। प्रायः लोग धारा के साथ बहते हैं, परन्तु ऋषि ने धारा के विपरीत चलने का मानो प्रण कर रखा था। देश, धर्म और समाज की परिस्थितियां ही कुछ ऐसी थी, जिसमें गलत बातों से समझौता करके चलने से काम बनने वाला नहीं था। इसलिए ऋषि का सम्पूर्ण जीवन मुसीबतों, कष्टों, बाधाओं और विपरीत परिस्थितियों में निकला। मगर स्वामी जी कभी निराश, हताश और दुःखी नहीं हुए। सच है कि—

ऋषि का व्यक्तित्व एवं कृतित्व चुम्बकीय था। जो भी उनके सम्पर्क में आया, उसी का कायाकल्प हो गया। न जाने कितने गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, हंसराज, लेखराम आदि जीवनों को उन्होंने सन्त, महात्मा व परोपकारी बना दिया। इतनी प्रेरक, आकर्षक तथा जादुई शक्ति और किसी महापुरुष में नजर नहीं आती। लोग तलवार लेकर आए, शिष्य बनकर गए। जिसने भी उन्हें देखा, सुना और सम्पर्क में आया, उसी पर उनका जादू चल गया। जिधर से निकले उधर ढोंग, पाखण्ड, अज्ञान, अन्धविश्वास को मिटाते हुए सत्यधर्म की रोशनी फैलाते गये। वह निर्भीक, ईश्वरविश्वासी, योगी, संन्यासी, संसार में बुराइयों, कुरीतियों, गुरुडम, ढोंगी महन्तों, सन्तों आदि के विरुद्ध अकेला चला, लड़ा और विजयी हुआ।

ऐसा देवपुरुष इतिहास में न मिलेगा, जिसने अपना सर्वस्व मानवता के कल्याण, उत्थान तथा मंगल में लगा दिया हो। अपने लिए कुछ न मांगा और न संग्रह किया। जीवन भर जहर पीया, पत्थर खाये, अपमान सहा, बदले में अमृत लुटाता रहा। संसार के महापुरुषों में किसी न किसी प्रकार का कोई न कोई दोष रहा है। पवित्रात्मा ऋषि दयानन्द के जीवन में आदि से अन्त तक किसी प्रकार की सांसारिक त्रुटि, दोष तथा दुर्बलता न थी। हीरे के समान उनका जीवन सभी ओर से चमकता था। उन्होंने लोभ और भय को जीता हुआ था।

प्रसिद्ध एकलिङ्ग की गद्दी को ठुकराने में उन्हें एक क्षण भी नहीं लगा। राजा ने कहा—स्वामिन्! सोच लो, इतनी धन-सम्पदा की गद्दी देने वाला तुम्हें कोई न मिलेगा। स्वामी जी ने एक क्षण भी नहीं लगाया और बोले—राजन्! तुम भी सोच लेना, इतनी धन-वैभव की गद्दी को ठुकराने वाला तुम्हें और कोई फकीर भी न मिला होगा। यह उनके स्वभाव का प्रेरक उदाहरण है। वे चाहते तो अपार सुख-वैभव साधनों में जीवन गुजार सकते थे। मगर उस महायोगी ने जीवन भर अपने लिये कुछ चाहा ही नहीं। सांसारिक सुख-भोग, सम्पदा आदि उनके लिए तुच्छ थी।

जर्मन विद्वान् मैक्समूलर से किसी ने पूछा—आप उन्नीसवीं शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि, चमत्कार तथा उल्लेखनीय घटना क्या मानते हैं? उन्होंने कहा—मैं इस शताब्दी का सबसे बड़ा चमत्कार व महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह मानता हूँ—ऋषि दयानन्द का संसार के सामने वेदों का यथार्थ स्वरूप प्रस्तुत कर देना। वेदों से आम जनता से सम्बन्ध जोड़ देना। वेदों को पढ़ने-पढ़ाने का सबको अधिकार है, इस मान्यता को स्थापित करना, जिसे महाभारत के पश्चात् अन्य कोई नहीं दे सका। यह निर्विवाद सच है कि ऋषि दयानन्द ने वेदोद्धार किया है। उन्होंने संसार को संदेश दिया है कि वेदों की ओर लौटो। मेरा नहीं वेदों की मानो।

वेदज्ञान परमेश्वर का आदेश, उपदेश तथा सन्देश है। वेद सबके लिए और उसे सबके पढ़ने का अधिकार है। वेदज्ञान ही आज के जीवन और जगत् को विश्वशान्ति, विश्वबन्धुत्व एवं मानवता की शिक्षा तथा प्रेरणा दे सकता है। 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है' इस सत्य को स्थापित करने के कारण ऋषि सदा अमर रहेंगे। स्वामी जी ने संसार को वेदज्ञान के बारे में वैज्ञानिक सोच व दृष्टि दी। यह अपने में महान् योगदान है। वेदों के बारे में तरह-तरह की फैली भ्रान्तियों का तर्क, प्रमाण और वैज्ञानिक अर्थ देकर उत्तर दिया। ऋषि ने स्पष्ट किया—भूत-प्रेत, फलित ज्योतिष, ग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव, पशुबलि, मांस-मदिरा का सेवन आदि कल्पित बातों का वेदों से कोई सम्बन्ध नहीं है। बाद में मध्यकाल में इन मिथ्या बातों का वेदों में मिलावट की गई।

संसार के ऊपर ऋषि दयानन्द के प्रत्येक क्षेत्र में अनन्त उपकार हैं। कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिस पर उन्होंने सत्य, यथार्थ, प्रेरक और व्यावहारिक प्रकाश न डाला हो। स्वयं गृहस्थी न होते हुए भी उन्होंने संसार को मानव-निर्माण की कुंजी 'संस्कार-विधि' दी। संस्कारों से ही आचार-विचार एवं जीवन का निर्माण होता है। आज मानव समाज में तेजी से संस्कारहीनता फैल रही है। इसी कारण सच्चे अर्थ में मानव-मानव नहीं बन पा रहा है। जब तक मानवीय गुणों से युक्त मनुष्य नहीं बनेगा, तब तक धरती पर सुख-शान्ति, प्रसन्नता, सन्तोष, भाईचारा आदि नहीं बनेगा।

संपर्क-गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7 फोन 033-22183825, 64505013, ऑफिस-26758903

thearyasamaj.org

शिक्षा के समविकास पर बल

❑ डॉ० अशोक आर्य, जी. 7, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी, जिला गाजियाबाद

यजुर्वेद के अध्याय 6 के मन्त्र संख्या 15 के ही अनुरूप यजुर्वेद के अध्याय 2 के मन्त्र संख्या 24 में भी शिक्षा के समविकास पर बल दिया गया है। मन्त्र इस प्रकार उपदेश कर रहा है—

सं वर्चसा पयसा संतनूभिरगगन्महि मनसा सं शिवेन।
त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्॥ यजुर्वेद 2.24

मन्त्र उपदेश करता है कि—

तेज से संयुक्त हों

हम सब तेज से संयुक्त हों अर्थात् हम सब तेजस्वी हों। तेज हमारे अन्दर वास करे। तेज को हम ग्रहण करें। तेजस्वी होकर हम अपने सब कार्य व्यवहार करें। तेजस्वी बनने के लिए यह आवश्यक है कि हमारा आहार भी ऐसा हो, जो तेज को उत्पन्न करने वाला हो, हमें बलवान, शक्तिशाली, ओजस्वी व तेजस्वी बनाने वाला हो। जब हम उत्तम व तेजस्वी आहार का प्रयोग करेंगे तब ही तो हम तेजस्वी बन पावेंगे। यदि हमारा आहार ही साधारण होगा, हमारा आहार हमें आलसी व दरिद्र बनाने वाला होगा तो हम कभी भी तेजस्वी नहीं बन सकते। इसलिए यह आवश्यक है कि हमारा आहार, हमारा भोजन ऐसा हो, जो हमें तेजस्वी बना सके अथवा जिस आहार में तेजस्विता के गुण हों।

हमारा आहार उत्तम हो

मन्त्र इस बात को आगे बढ़ाते हुए उपदेश करता है कि हमारे आहार में दुग्ध, रस तथा भक्ति रस में भरपूर हो। हम जानते हैं कि दुग्ध, विशेष रूप से गाय का दुग्ध गुणों की खान है। जो व्यक्ति सदा गाय का दूध, गाय का घी, गाय का दही, मक्खन, छाछ आदि का प्रयोग करता है, उसे कभी कोई रोग नहीं आता तथा उसका शरीर सदा तेज से भरपूर व आनन्दित रहता है। जो अनेक प्रकार के रसों का अर्थात् फलों का प्रयोग अपने आहार में करता है, वह भी सदा समविकास की श्रेणी में आता है तथा जो भक्ति रस का पान करता है, उसे भी परमपिता परमात्मा के आशीर्वाद से समविकास के उत्तम अवसर प्राप्त होते हैं। इसलिए मन्त्र यह उपदेश कर रहा है कि हमारा भोजन ऐसा हो जिसमें तेज पैदा करने की क्षमता हो, हम सदा रसों के पान के साथ ही साथ भक्ति रस का भी पान करें। इससे हम में समविकास की सब शक्तियों का उदय तथा विकास होगा।

हमारा स्वास्थ्य उत्तम हो

मन्त्र यह भी कहता है कि समविकास के लिए यह भी आवश्यक है कि हमारा स्वास्थ्य उत्तम हो। उत्तम स्वास्थ्य के बिना कोई भी कार्य ठीक से सम्पन्न नहीं किया जा सकता। इसलिए स्वास्थ्य के उत्तम हुए बिना समविकास का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता। उत्तम स्वास्थ्य ही हमें सफलता की ओर ले सकता है। उत्तम स्वास्थ्य के बिना तो हम किसी प्रकार का पुरुषार्थ भी नहीं कर सकते। पुरुषार्थ के लिए भी उत्तम स्वास्थ्य का होना आवश्यक है। जब हम पुरुषार्थी बनकर खूब भरपूर मेहनत करते हैं तो हम मनोवांछित फल पाने में सफल होते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषार्थी ही सफल होता है। अत: हमारी आज की शिक्षा की यह भी एक बहुत बड़ी समस्या है कि आज हम पुरुषार्थ से भागने लगे हैं। इस कारण ही हम शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर पिछड़ते चले जा रहे हैं। इसका कारण है कि हमारे भोजन में तेजस्वी पदार्थों की कमी तथा इसका कारण स्वास्थ्य में ह्रास। यदि हम इस समस्या का समाधान चाहते हैं तो निश्चय ही हमें वेद की शरण में जाकर समाधान न केवल खोजना ही होगा बल्कि अपने जीवन को उस समाधान के अनुरूप बनाते हुए उत्तम भोजन के द्वारा अपने स्वास्थ्य को उत्तम बनाना होगा।

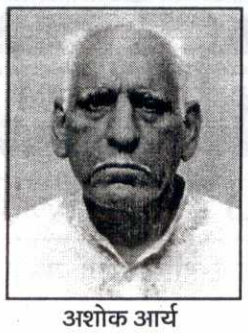
अशोक आर्य

हमारा शरीर पुष्ट हो

शरीर की पुष्टि भी समविकास के लिए आवश्यक है। यदि हमारा शरीर पुष्ट है तो हम गहन से गहन विचार को भी बड़ी सरलता से ग्रहण कर सकते हैं जबकि अपुष्ट शरीर प्राय: शक्तिहीन होता है अथवा इसमें शक्ति की कमी होती है, जो शरीर को एकाग्र नहीं कर सकती। जब तक शरीर में एकाग्रता नहीं है, हम किसी भी कार्य में सफल नहीं हो सकते, हम किसी भी कार्य को सफलता से सम्पन्न नहीं कर सकते। फिर समविकास कैसे करेंगे? अत: समविकास के लिए शरीर की पुष्टि भी आवश्यक है।

हमारा मन शुभ विचार वाले हों

समविकास के लिए विचारों की शुद्धि का होना भी आवश्यक है। किसी भी मानव के उत्तम विचार उसे ऊँचा उठा सकते हैं तो उसके निम्न विचार उसे नीचे गिराने में भी कोई देर नहीं लगाते। एक व्यक्ति के विचार अति उत्तम है, संसार उसके उत्तम विचारों के कारण उसका आदर सत्कार करता है किन्तु ज्यों ही उसके विचारों में थोड़ी सी भी गिरावट आती है तो जो संसार उसका आदर करता था, वह ही लोग उस पर थू-थूकार करने लगते हैं। विचार ही हैं जो उत्तम हैं तो प्रगति पथ पर अग्रसर करते हैं तथा इनके निम्न होने पर प्रगति का मार्ग बन्द हो जाता है तथा इसका स्थान ले लेता है अवन्ती का मार्ग, पीछे ले जाने वाला मार्ग। उच्च विचारों वाले की बुद्धि एक स्थान पर केन्द्रित होने से प्रत्येक क्षेत्र में उसे सफलता मिलती है तथा पुरुषार्थ से वह आगे बढ़ता है जबकि निम्न विचार अनेक प्रकार की शंकाओं को पैदा करने के कारण होते हैं, जिससे वह किसी भी कार्य में अपने ध्यान को केन्द्रित नहीं कर पाता इसलिए वह किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो पाता। आज समाज में विचारों की उच्चता का निरन्तर ह्रास होने के कारण शिक्षा के क्षेत्र में भी ह्रास हो रहा है। अत: इस समस्या के समाधान के लिए अपने विचारों को अपने मन को शुद्ध कर समविकास की ओर बढ़ना ही हमारी सफलता का साधन है।

दानशील प्रभु हमें सब ऐश्वर्य दे

परमपिता परमात्मा माता के समान सब प्रजाओं का पालक है। जिस प्रकार माता अपनी प्रजा अर्थात् संतान का पालन करती है, उस प्रकार ही हमारे यह पिता भी, यह प्रभु भी हमारे पिता होने के साथ ही साथ हमारी माता भी है। माता होने के कारण वह हमारा पालन माता बनकर ही करते हैं। इतना ही नहीं यह प्रभु एक बहुत बड़े दाता भी हैं, महान् दानशील हैं तथा सदा दान में ही लगे रहते हैं। दानशील प्रभु से हम सदा यह प्रार्थना करते हैं कि वह प्रभु हमें इतना दान दे, हमारे ऊपर धनों की इतनी वर्षा करे कि वह सब प्रकार के धनों की अपार सम्पदा का हमें स्वामी बनावे।

इतना ही नहीं वह प्रभु हमारे अन्दर की सब न्यूनताओं को, सब दोषों को, हमारी सब निर्बलताओं को दूर कर, हमें निर्मल, स्वस्थ बनाते हुए सब प्रकार के ऐश्वर्यों को हम में धारण करावे।

समविकास के लिए मन के साथ ही साथ बुद्धि व चित्त आदि की शक्तियों के विकास की भी आवश्यकता होती है। इसके लिए यजुर्वेद के अध्याय 6 सूक्त 41 के मन्त्र 1 में स्पष्ट किया गया है, जिसका वर्णन हम आगे करेंगे।

शौर्य दिवस पर वेदप्रचार

दिनांक 3 जुलाई 2014 को मोखरा (रोहतक) में बृहद् यज्ञ व उपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में प्रथम बृहद् यज्ञ हुआ। शहीद कृष्ण जी के पुत्र विकी यजमान बने तथा अनेक युवा, स्त्री पुरुष कार्यक्रम में सम्मिलित हुए आचार्य जी ने अथर्ववेद के 14वें काण्ड में वर्णित क्षात्र शक्ति पर अपने विचार रखे। धर्म की स्थापना हेतु क्षत्रिय की भूमिका अहम् होती है। बुद्ध के शान्ति के प्रसार से क्षत्रिय अशोक जैसे राजाओं ने भारत की बहुत बड़ी हानि की। इस हानि को प्रमेष्ठि होते हुए ऋषि दयानन्द ने क्रान्ति का बिगुल बजाया। कार्यक्रम अति सुन्दर रहा।

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें।

—सभामन्त्री

thearyasamaj.org

प्रभु की शरण

-: वेद-मन्त्र :-

यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम्।
अपित्वे नः प्रपित्व तूयमा गहि कण्वेषु सुसचा पिब॥ साम० 10/252

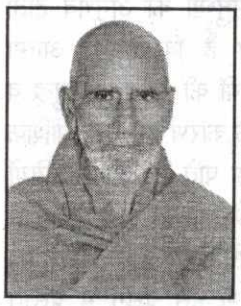

शब्दार्थ-यथा (जैसे) गौरः (उद्योगशील मृग) तृष्यन् (पिपासायुक्त) अव-ईरिणम् (सुदूर मरुभूमि को) एति (जाता है) अपाकृतम् (दूरी पर दिखने लगता है) तूयम् (शीघ्रता से) नः (हमारी) अपित्वे (मित्रता में) प्रपित्वे (समर्पण में) आगहि (आ जा) कृण्वेषु (विद्वानों में सम्मिलित हो) सचा (मेरे साथ) सुपिब (अच्छी प्रकार आनन्द का पान कर)।

भावार्थ-मनुष्य प्रकृति के पीछे न भागकर प्रभु को समर्पित हो और उसके आनन्द को प्राप्त करे।

व्याख्या-प्रकृति सत् है। जीव सत् चित् है। ईश्वर सत्, चित् व आनन्द है। जीव मनुष्य जन्म प्राप्त कर दोनों के बीच में खड़ा है। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है। प्रकृति की गोद का रास्ता सरल है। ईश्वर प्राप्ति तप साध्य है। एक यात्री ने यात्रा करते समय दो मार्ग देखे। एक अतीव आकर्षक राजमार्ग था तथा उसके दोनों ओर सुन्दर वृक्षों की पंक्ति मनमोहित थी। उस मार्ग के लिये बोर्ड पर लिखा हुआ था कि खाने-पीने का साधन नि:शुल्क तथा पर्याप्त मनोरञ्जन के साधन मध्य में होंगे। परन्तु मार्ग समाप्ति पर सैकड़ों कोड़े लगेंगे। अन्त में अन्धेरी कोठरी में डाल दिया जायेगा। वहाँ सड़-सड़कर मरना पड़ेगा। 25 वर्ष तक रास्ते में अलभ्य ठाठ भोगने के लिये मिलेंगे। दूसरा मार्ग अत्यधिक असुविधायुक्त था कांटों से भरा हुआ था। हिंसक जानवरों से घिरा हुआ। चोर व डाकुओं का भय व्याप्त था। असंख्य कष्टों से भरा हुआ था। मार्ग में भोजन भी कठिनता से मिलता था। अन्त में सभी सुविधाओं से युक्त स्वर्ग के समान नगर था। पहुंचते ही विशेष सम्मान मिलता था। रहने, उपदेश, स्वाध्याय, सत्संग के सभी साधन हैं। 25 वर्ष में पहुंचना बहुत कठिन कार्य है। अधिकांश में मनुष्य सरल मार्ग को ही चुनते हैं। मार्ग में लुभाने के साधन कौन छोड़े? घर, माता-पिता तथा सम्बन्धियों को भी भूल जाते हैं। रंगरलियों में खो जाते हैं। विरले मनुष्य कठिन स्वर्गस्थल पर पहुंचाने वाले मार्ग को पकड़ते हैं।

कहावत है—'जैसी नीयत हराम में उतनी प्रभु में हो। सीधा जाये स्वर्ग में पल्ला पकड़े न कोई।' अनेक लोग जीरों से हीरो बन जाते हैं। अपार सम्पत्ति के मालिक बन जाते हैं। परोपकार के क्षेत्र में जीरों से जीरो बनने वाले तथा अनेक ईश्वर के उपासक उसी प्रकार से हो जाये तो यह धरती स्वर्ग बन जाये। विश्व का कल्याण हो जाये। वेदमन्त्र में साफ कहा है कि माया की ओर जाने का रास्ता में मृगतृष्णा के समान है। असुख को सुख समझना है। सोचता है कि इतनी सम्पत्ति होने पर सुख मिलेगा। वह इच्छित सम्पत्ति प्राप्त होने पर साधनों की ओर दृष्टि डालता है। इतने साधन होने पर ही सुख की श्वास आयेगी। अधिक संग्रहार्थ प्रवृत्त होता है। अन्त में ऋषियों के सिद्धान्त को मानना पड़ता हैं। **न वित्तेन तर्पणीय मनुष्यः। तव नृत्यगीते तव एव भोगाः।** मनुष्य कभी धन से तृप्त नहीं होता जब आँखें खुलती हैं। मुझे नाच, गान, गीत तथा भोग नहीं चाहिये यह कह उठता है। ईश्वर इस मन्त्र में मनुष्य को पुकारता है कि विद्वानों तथा मेरी शरण में आ जा। भटक मत।

—आचार्य बलदेव

हरयाणा में बढ़ता शराब का नशा

हरयाणा प्रदेश में लगातार शराब फैलती जा रही है। शराबियों से दु:खी जनता लगातार कहीं न कहीं पर शराब के ठेकों के विरोध में धरने प्रदर्शन करती रहती है। अभी हिसार के सूर्यनगर में सैकड़ों महिलाएं शराब के ठेके को बन्द कराने के लिए धरने पर बैठी हुई हैं। इससे पहले रोहतक के सुभाष नगर, गांधी नगर, मेडिकल मोड़, गोहाना अड्डा, गांव अजायब, सोनीपत के माहरा बढ़ मलिक, नारनौल के खतौली जाट हिसार के ही बरवाला, मोरखी, सरसाना, पनिहारी, बयाना, सिवानी (भिवानी) के चिड़ौद, कैथल के हरसाना आदि सैकड़ों गांवों व नगरों में शराब ठेकों के विरोध में धरने प्रदर्शन हो चुके हैं। रोजाना शराबियों के उत्पात के समाचार प्रत्येक स्थान से आ रहे हैं।

गुड़गांव के सहारा माल में आए दिन हो रहे शराबियों के उत्पात से तंग लोगों ने प्रदर्शन किये हैं वहां देशी विदेशी लोग झगड़ा करते हुए गिरफ्तार भी किए गए हैं। लेकिन फिर भी पब-संस्कृति को बढ़ावा दिया जा रहा है। अभी उच्च न्यायालय ने पानीपत-जालन्धर उच्च राजमार्ग पर स्थित 85 शराब के ठेकों को बन्द करने के आदेश दिए हैं, लेकिन सरकार अनेक प्रकार से बहाने लगाकर ठेके उठाना नहीं चाह रही है। पिछले दिनों मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने कितना हृदयहीन बयान दिया था कि **''प्रदेश में नशा बहुत बढ़ गया है सरकार नशामुक्ति केन्द्रों की संख्या बढ़ाएगी।''** भला यह क्या तर्क है? शराब के ठेके कम करके नशामुक्ति केन्द्र बढ़ाना तो ऐसा ही है जैसे रोगी को परहेज न कराकर दवा देते जाना या गाड़ी को रोकने के लिए रेस देते हुए थोड़े-थोड़े ब्रेक लगाना।

आबकारी कराधान मन्त्री हरयाणा को शराबियों से दु:खी महिलाओं की पुकार सुनाई नहीं पड़ती। उन्हें महिलाओं से कोई भी सहानुभूति नहीं है। जबकि उनके ससुर 'हरियाणा निर्माता' चौधरी बंसीलाल जी ने प्रदेश में शराबबन्दी कर एक आदर्श प्रस्तुत किया था। भले ही वह वोटों के लिए किया हो, भले ही वह असफल हुआ हो, लेकिन वह भी हरयाणा में एक कीर्तिमान स्थापित है।

—महावीर 'धीर' कार्यकारी प्रधान,
राष्ट्र निर्माण परिषद् हरयाणा

ओ३म्

गोभक्त महासम्मेलन

महान गोभक्त हरफूल जाट जुलानी वाले के बलिदान दिवस पर

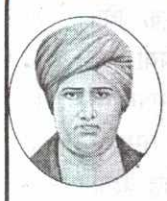

स्थान
नई अनाज मण्डी,
जीन्द
हरयाणा

समय
रविवार
27 जुलाई 2014
प्रातः 10 बजे

कट्टी गाय करे पुकार, जीन्द पहुचों एक बार

निवेदक- गोरक्षा दल हरियाणा, हरियाणा गोशाला संघ, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा व समस्त हिन्दू संगठन
94672-40298, 99961-48506, 94168-03650, 94662-01546, 98120-20002, 94660-59039, 93549-08878, 94660-13113,94168-74065

सूचना

पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज के आशीर्वचन से तथा **पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक** (रोजड़ वाले) की अध्यक्षता में गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक) में दिनांक 13 अगस्त बुधवार से 17 अगस्त 2014 रविवार तक **पाँच दिवसीय आवासीय सरल आध्यात्मिक शिविर** का आयोजन स्त्री आर्यसमाज देव कालोनी रोहतक-09812792 770 व वैदिक सरल आध्यात्मिक शिविर समिति रोहतक-09466008120 तथा आर्यावर्त टांसपोर्ट कंपनी रोहतक-09215676662 के द्वारा किया जा रहा है। पंजीकरण अनिवार्य है। पंजीकरण/ शिविर शुल्क 800/- रु० प्रति शिविरार्थी है। लाभार्थी संपर्क करें। अन्य सम्पर्क सूत्र—

09355674547, 09416139382,
09728884949, 09466566064,
09896326718, 09255537679

रणवीर सिंह बल्हारा
प्रधान आर्यसमाज सैक्टर-1, रोहतक

thearyasamaj.org

सृष्टि और आध्यात्मिक विज्ञान का आधार—वेद

❑ मनमोहन कुमार आर्य

इससे पूर्व कि सृष्टि और आध्यात्मिक विज्ञान की चर्चा की जाये, संक्षेप में यह जानना आवश्यक है कि वेद क्या हैं? वेद एक शब्द है जिसका अर्थ जानना व ज्ञान होता है। संसार में वेद नाम की अन्य कोई पुस्तक नहीं है जिसका कि कोई इतिहास न हो अर्थात् वेद-नामेतर सभी पुस्तकों व मत-मतान्तरों के धर्म-ग्रन्थों आदि सबका इतिहास अर्थात् लेखन का निश्चित काल व समय है। इन सबको ऐतिहासकि मनुष्यों ने लिखा व संकलित किया है। संसार में केवल **''चार वेद''** ही ऐसी पुस्तकें या मन्त्र संहितायें हैं जिसको बनाने वाली निराकार व सर्वव्यापक सत्ता ईश्वर है। इसका कारण न तो इसका कोई इतिहास उपलब्ध है और न ही इसके लेखक का कोई नाम व पता ही इतिहास में अंकित है। वेदों की अन्तःसाक्षी भी इसे ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करती है। शिक्षित व्यक्ति इस बात पर विश्वास नहीं कर सकते कि निराकार, सर्वव्यापक व सच्चिदानन्द-स्वरूप वाले ईश्वर से वेदरूपी ज्ञान उत्पन्न हो सकता है, जबकि यह बात पूर्णतः सत्य है। आइये, इस पर संक्षेप में विचार कर लेते हैं। वेदों का ज्ञान ईश्वर से मनुष्यों को किस प्रकार से मिला, यह जानने के लिए ईश्वर तथा जीवात्मा के स्वरूप का जानना आवश्यक है। यहां इतना ही जानना पर्याप्त है कि ईश्वर चेतन तत्व है जो कि सर्वातिसूक्ष्म, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, निराकार व सर्वान्तर्यामी है। जीवात्मा भी एक चेतन तत्व, सूक्ष्म, एकदेशी, ससीम, अल्पज्ञ व अणु परिमाण है। ईश्वर सर्वव्यापक है व जीव व्याप्य है अर्थात् ईश्वर जीव के अन्दर और बाहर भी है। वेदों के अध्ययन व बौद्धिक ऊहापोह के आधार पर हम जानते हैं कि ईश्वर सर्वज्ञ अर्थात् सब सत्य विद्याओं का भण्डार है। आजकल की भाषा में इसे कह सकते हैं कि उसका ज्ञान अनन्त है और उसमें अज्ञान की मात्रा शून्य है। जीवात्मा के बारे में हम जानते हैं कि यह अल्पज्ञ है और अपने से अधिक ज्ञानी से ज्ञान की प्राप्ति की अपेक्षा रखता है। इसी गुण के कारण हमारे आज के ज्ञानी व वैज्ञानिकों ने अपने पुरुषार्थ से अपनी अल्पज्ञता को न्यून कर ज्ञान अर्जित किया है तथा वह संसार में अधिकतर सामान्य मनुष्यों से कहीं अधिक ज्ञान रखते हैं। हमारा सबका यह अनुभव है कि जब दो मनुष्य मिलते हैं तो आपस में मुख से बोलकर परस्पर वार्तालाप कर ज्ञान का आदान-प्रदान करते हैं। दूर होने पर वह जोर देकर बोलते हैं तथा पास आने पर धीरे बोलते हैं। एकदम, एक दूसरे के निकट होने पर और धीरे से बोलते हैं जिससे दूसरों के लिए उनका बोलना बाधक न हो। यह स्थिति तब है कि जब दोनों की आत्मायें पृथक-पृथक शरीरों में हैं। यदि कोई व्यक्ति कुछ गुप्त बात दूसरे के कान में कहता है तो पास वाले व्यक्ति को उसके ओठों के हिलने से पता चलता है कि वह बोल रहा है परन्तु ध्वनि, स्वर व आवाज बिलकुल सुनाई नहीं देती। इसे यह भी कह सकते हैं कि बिना ध्वनि के व्यक्ति अपनी बात दूसरे को समझा व सुना रहा है। अब यदि स्थिति यह बन जाये कि उपदेश या व्याख्यान देने वाला व्यक्ति व सत्ता जीवात्मा के अन्दर भी व्यापक व उपस्थित हो तो क्या बोलने की आवश्यकता होगी? इसका उत्तर है कि कदापि नहीं। ईश्वर जैसी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी सत्ता को शब्द को उच्चारित करने की किंचित आवश्यकता नहीं होगी। वह उसकी आत्मा में ज्ञान प्रकट कर सकता है। इसी प्रकार से सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने अपना ज्ञान चार वेदों यथा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद के रूप में क्रमशः अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा नाम के चार मनुष्यों को दिया था। यह चारों मनुष्य उच्च कोटि के ऋषि थे अर्थात् इनकी आत्मायें अत्यन्त शुद्ध व पवित्र थी। वेदों का ज्ञान इन शुद्धात्मा ऋषियों को दिए जाने के कारण ज्ञान प्राप्त करने में इन ऋषियों को कोई कठिनाई नहीं हुई। ईश्वर ने ही उन्हें सभी मन्त्रों के अर्थ भी जना दिये थे। चारों वेदों का ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद इन ऋषियों ने वेदों का प्रचार किया और सबसे पहले ब्रह्मा नाम के ऋषि को प्रदान किया और उनके बाद सबने मिलकर अन्य मनुष्यों को वेदों का ज्ञान, अध्ययन व अध्यापन द्वारा, प्रकाशित व प्रचारित किया। वेदों को मनुष्यों को इस प्रकार दिया ज्ञान सम्भव कोटि में आता है। आजकल भी हमारे मन व आत्मा में नाना प्रकार के विचार, चिन्तन व ऊहापोह बिना शब्दों को बोले स्वतः चलता रहता है। कई बार आत्मा में कोई नया विचार अचानक आ जाता है। वह विचार ईश्वर के द्वारा प्रेरणा के रूप में हो सकता व होता है। हम उसे नोट कर लेते हैं और उस पर कुछ अधिक चिन्तन व मनन करने पर कई बार वह हमें बड़ी सफलता प्रदान करता है जिससे हमें प्रसन्नता व आनन्द की उपलब्धि होती है। हम समझते हैं कि यह सभी मनुष्यों का अनुभव होता है। हमें लगता है कि हमारी आत्मा योगियों व ऋषियों की भांति पूर्ण शुद्ध व पवित्र न होने के कारण हम उसे आंशिक रूप से ही समझ पाते हैं। आदि ऋषियों ने ईश्वर की प्रेरणा को पूरी तरह से समझा था। महर्षि दयानन्द के जीवन का भी एक उदाहरण इस प्रसंग में प्रस्तुत करते हैं। महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेद का आंशिक व यजुर्वेद का सम्पूर्ण भाष्य किया है। जिन दिनों वह भाष्य करा रहे होते थे तो यदा-कदा किसी मंत्र का अर्थ व भाव प्रस्तुत करने में उन्हें कठिनाई होती थी। ऐसे अवसर पर वह भाष्य लिखने वाले पण्डितों को रोक कर अपनी कुटिया में चले जाते थे और वहां समाधि लगाकर बैठते थे। कुछ समय में समाधि में रहने के बाद वह वेदभाष्य लिखने वाले पण्डितों के पास आकर उस मन्त्र के अधूरे भाष्य, वेदार्थ वा मन्त्र के भावार्थ को पूरे विश्वास से लिखा देते थे। यह घटना यह बताती है कि समाधि की अवस्था में महर्षि दयानन्द ईश्वर का साक्षात्कार कर उससे मन्त्रों के यथार्थ अर्थ पूछते थे और परमात्मा उनको अर्थ बताता था। इस घटना का विवरण देखने के लिए आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान डा. भवानीलाल भारतीय की पुस्तक 'मैंने ऋषि दयानन्द को देखा' का अध्ययन किया जा सकता है। हम यहां पाठकों व श्रोताओं को सत्यार्थ प्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का वेदोत्पत्ति प्रकरण पढ़ने का भी अनुरोध करते हैं।

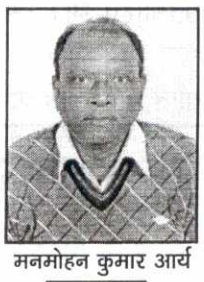

मनमोहन कुमार आर्य

संसार में हम अपने नेत्रों से जिस दृश्यमान जगत् को देखते हैं वह जड़ पदार्थ है। हमारा अपना शरीर जिसमें पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार हैं, वह भी जड़ है। यह इन्द्रियां व अन्य अवयव सूक्ष्म कारण प्रकृति के विकार हैं जो सृष्टि की उत्पत्ति के समय कारण प्रकृति जो सत्व, रज व तम गुणों की साम्यावस्था कही जाती है, उस सूक्ष्म प्रकृति से बने हैं। अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि ईश्वर ने अत्यन्त सूक्ष्म प्रकृति से इस सृष्टि को कैसे बनाया है? इसका उत्तर देने से पूर्व हम यह कहना चाहते हैं कि हम सबका शरीर जड़ प्रकृति से बना हुआ है जिसमें जीवात्मा अर्थात् 'मैं' व 'हम', जो एकदेशी, अल्पज्ञ, सूक्ष्म, असीम, अनादि, अजन्मा, अमर, नित्य व चेतन तत्व है तथा जो इस शरीर में रहता है और शरीर को चलाता है। इस जीवात्मा के शरीर में न रहने पर शरीर जीवित नहीं रहता है जिससे यह सिद्ध होता है कि जीवात्मा ही मनुष्य व अन्य सब प्राणियों के शरीरों को चला रहा है। आत्मा का निर्देश मिलते ही हाथ इच्छानुसार गति करता है, शरीर उठ जाता है, इच्छा करने पर पैर इष्ट दिशा में चल पड़ते हैं, इच्छा के होने पर ही वाणी बोलती है व बोलने की इच्छा न होने पर चुप हो जाती है। सब कार्य जीवात्मा के इच्छा व संकल्प रूपी गुणों एवं शक्ति से सम्पन्न होते हैं। वेदों के अनुसार ईश्वर का स्वरूप सच्चिदानन्द, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। इन गुणों के अतिरिक्त भी ईश्वर में अनन्त गुण हैं परन्तु हमारा उद्देश्य ईश्वर के इन कुछ ही गुणों से पूरा हो जाता है। यह समझने की आवश्यकता है कि जिस प्रकार से जीवात्मा अपने शरीर को चलाती है, उसी प्रकार से परमात्मा सारी प्रकृति को, जो उसके पूरी तरह से वश व अधिकार में है, अपनी इच्छानुसार, जिसे ''ईक्षण'' कहते हैं, चलाता वा सृष्टि की रचना व उत्पत्ति करता है। वह पहले प्रेरणा व ईक्षा द्वारा प्रकृति की साम्यावस्था में गति व हलचल पैदा करता है। मूल अथवा कारण प्रकृति, इसके तीन गुणों सत्व, रज व तम की साम्यावस्था होती है। ईश्वर की प्रेरणा अर्थात् ईक्षण से इसमें गति व हलचल आती है। यद्यपि हमारे सत्य शास्त्रों में इस प्रकृति का पहला महत्तत्व व दूसरा अहंकार नाम का विकार लिखा गया है परन्तु आधुनिक विज्ञान की खोजों व जानकारी के अनुसार प्रकृति का सूक्ष्मतम कण परमाणु है। हम इस परमाणु को पहला व पहले कुछ विकारों के बाद के कुछ उन्नत विकारों की श्रेणी में रख सकते हैं। यह, परमाणु, महतत्व व अहंकार में से कोई एक विकार हो सकता है। हमारे ऋषियों की बुद्धि अत्यन्त शुद्ध, पवित्र व सूक्ष्म विषयों को जानने व ग्रहण करने में समर्थ थी। वह सब साक्षात्कृत-धर्मा अर्थात् वैज्ञानिकों से भी अधिक बुद्धिमान थे। वह कूप-मण्डूक या आजकल के पौराणिक पण्डितों की तरह अन्ध-परम्परावादी नहीं थे अपितु वेदों के ज्ञान के साथ उन्होंने ईश्वर का साक्षात्कार भी किया हुआ था और यह सब सृष्टि विज्ञान, पदार्थ विज्ञान या

शेष पृष्ठ 5 पर....

thearyasamaj.org

सृष्टि और आध्यात्मिक विज्ञान का.... पृष्ठ 4 का शेष....

भौतिक विज्ञान जिसमें रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, प्रकाश, उष्मा, गति, विद्युत, गुरुत्वाकर्षण, भूगोल आदि सभी ज्ञान-विज्ञान के पारदर्शी तत्ववेत्ता ज्ञानी, वैज्ञानिक व ऋषि अर्थात् तत्ववेत्ता मनीषी थे। उन्होंने प्रकृति की साम्यावस्था का भी अपने सूक्ष्म ज्ञान से साक्षात्कार किया था और परमाणुओं की रचना व उत्पत्ति के ज्ञान व विज्ञान से भी वह पूरी तरह परिचित व विज्ञ थे। उन्होंने अपने विशद ज्ञान के आधार पर यह स्वीकार किया है कि प्रकृति में विकार होकर जो परमाणु, अणु व यह दृश्यमान जगत बना है, जिसमें सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, अग्नि, जल, वायु, आकाश, विद्युत, प्रकाश आदि हैं, यह सब पदार्थ ईश्वर के द्वारा बनायें गये हैं। जिस प्रकार से किसी रचना का पूर्ण ज्ञान उसके रचयिता को ही होता है उसी प्रकार से इस सृष्टि का पूर्ण ज्ञान तो इसके उत्पत्तिकर्ता ईश्वर को है व अध्ययन, चिन्तन, मनन व ध्यान के द्वारा कुछ ज्ञान वैज्ञानिक कहे जाने वाले व्यक्तियों को भी है। परमाणु कैसे बनें, अस्तित्व में आये अथवा इनकी उत्पत्ति का ज्ञान तो आज के वैज्ञानिकों को भी नहीं है जिसका कारण वैज्ञानिकों का ईश्वर के अस्तित्व को ही अस्वीकार करना है। यह ज्ञान व विज्ञान वेदों में उपलब्ध है जो सृष्टि नियमों के अनुकूल होने के कारण सभी ज्ञानी व विज्ञानियों के लिए मान्य व स्वीकार्य होना चाहिये। ऋग्वेद का नासदीय सूक्त (ऋग्वेद 10/129) सृष्टि की रचना व इसकी उत्पत्ति के विज्ञान को जानने व समझने के लिए दृष्टव्य है। वैशेषिक और सांख्य दर्शन से भी सृष्टि विज्ञान को जानने में कुछ सहायता ली जा सकती है। इस प्रकार यह सिद्ध हुआ कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो सृष्टि के आरम्भ में प्रथम वा आदि चार ऋषियों को सीधे परमात्मा से, उनकी अन्तरात्माओं में पउचंतज करके दिया गया था। यह भी हमने जाना है कि सृष्टि उत्पत्ति का ज्ञान भी वेदों में उपलब्ध है जिसको जान व समझ कर सृष्टि रचना के रहस्य को जाना जा सकता है। वेद और सृष्टि का रचयिता ईश्वर है, यह भी हमने जाना है। महर्षि दयानन्द महाभारत काल के बाद वेदों के सबसे बड़े विद्वान हुए हैं। उन्होंने वेदों का भाष्य करने से पूर्व चारों वेदों की भूमिका के रूप में एक ग्रन्थ की रचना की है जिसे उन्होंने ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका का नाम दिया है। इस पुस्तक में उन्होंने सृष्टि उत्पत्ति के साथ आधुनिक विज्ञान से सम्बन्धित अनेक विषयों पर, जो वेदों में भी वर्णित है, विस्तार से प्रकाश डाला है। इन विषयों में पर्यावरण, वायु शुद्धि, यज्ञ से वर्षा, सृष्टि विद्या, पृथिव्यादि लोक भ्रमण, आकर्षण-अनुकर्षण वा सृष्टि का धारण, प्रकाश्य-प्रकाशक लोक, गणित विद्या, जलयान व विमान, तार विद्या, वैद्यक वा चिकित्सा शास्त्र आदि को लिया है। महर्षि दयानन्द अंग्रेजी से सर्वथा अनभिज्ञ थे। वह कभी किसी सरकारी या ऐसे स्कूल जहां विज्ञान आदि पढ़ाया जाता है, न तो गये थे और न ही सम्पर्क में आये थे। उन्होंने अपने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ग्रन्थ में जो कुछ भी लिखा है, वह उनके वेदाध्ययन व स्वयं के अध्ययन व चिन्तन का परिणाम है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के विषयों से सहज ही यह अनुमान लगता है कि उन्होंने वेदों के आधार पर ही इन विषयों को लिखा है। यदि यह ज्ञान वेदों में हैं, जिसके कि उन्होंने प्रमाण भी उद्धृत किये हैं, तो वेदों में इन विज्ञान से जुड़े विषयों का वर्णन होना प्रमाणिक व सत्य सिद्ध होता है। अतः प्राचीन काल में वेदों के आधार पर भारत के ऋषि-मुनियों व शिक्षकों ने वेदों के आधार पर विज्ञान को विकसित किया था। आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व और सृष्टि बनने से 1,96,08, 48,000 वर्ष पश्चात महाभारत के युद्ध के समय तक भारत ज्ञान-विज्ञान से पूर्णतः सम्पन्न था। इस महायुद्ध के बाद भारत का पतन आरम्भ होता है और मध्यकाल अर्थात् 2,000-2,500 वर्ष पूर्व देश की स्थिति अति दयनीय हो गई। देश अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, अन्ध-परम्पराओं, मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, जन्म के आधार पर ऊंची-नीची जातियों में बंट व फंस गया। ऐसे स्थिति में यूरोप व निकटवर्ती देशों में ईश्वर ने कुछ सुसंस्कारित ऐसी जीवात्माओं को जन्म दिया और उन्हें प्रेरणा की कि वह सृष्टि के बारे में विज्ञान के आधार पर चिन्तन करें। उन्होंने चिन्तन किया जिसका परिणाम यह हुआ कि समय-समय पर विज्ञान के नये-नये सिद्धान्त अस्तित्व में आये जो सृष्टि में तो कार्य कर रहे थे परन्तु जिनका ज्ञान उस समय के देश-विदेश के सुविज्ञ लोगों में प्रायः नहीं था। इस प्रकार से ज्ञान के विस्तार का आरम्भ होकर वह दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहा जिसने आज एक वट-वृक्ष का रूप धारण कर लिया है। हमारे चार वेद व प्राचीन वैदिक साहित्य किसी भी प्रकार से विज्ञान की प्रगति व वृद्धि में बाधक नहीं रहे अपितु साधक ही रहे हैं। यदि न होते तो महर्षि दयानन्द ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका में उनका वर्णन नहीं कर सकते थे। अतः यह निर्विवाद रूप से स्वीकार कर सकते हैं कि सृष्टि के आरम्भ से लगभग 1,96,06,48,000 वर्षों तक, महाभारतकाल तक, वेदों के आधार पर ही ज्ञान-विज्ञान विकसित हुआ था जो महाभारत के युद्ध के कारण पतनोन्मुख हुआ। इसके बाद विगत 2-3 शताब्दियों से यूरोप के लोगों के पुरूषार्थ व निष्पक्ष चिन्तन से विज्ञान पुनः विकसित हुआ है। वेद अन्य धर्मों के ग्रन्थों की भांति विज्ञान की प्रगति में बाधक नहीं रहे हैं अपितु साधक हैं जो कि ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका ग्रन्थ से ज्ञात होता है।

आइये, अब वेदों में आध्यात्मिक ज्ञान व विज्ञान का चर्चा करते हैं। वेदों के अनुसार संसार में मुख्यतः दो प्रकार के तत्व हैं, एक चेतन व दूसरे जड़। जड़ पदार्थों का ज्ञान भौतिक विज्ञान के अन्तर्गत आता है तथा ईश्वर व जीवात्मा, जो कि चेतन तत्व हैं, का अध्ययन आध्यात्मिक ज्ञान के अन्तर्गत आता है। ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप का वेदसम्मत वर्णन हम उपर्युक्त पंक्तियों में कर चुके हैं। अध्यात्म में जीवात्मा को आनन्द से रहित व सुख व आनन्द की अपेक्षा रखने वाला बताया जाता है। यह सुख कुछ सांसारिक पदार्थों व सुख-सुविधाओं की वस्तुओं से प्राप्त होता है परन्तु सांसारिक सुख-सुविधाओं व भोगों में सीमित सुख है। यह सांसारिक सुख समय के साथ कम होते-होते समाप्त हो जाता है। सभी सांसारिक सुख-सुविधा के पदार्थ दुःखों से मिश्रित होते हैं। यह सभी सांसारिक भोग धन से प्राप्त होते हैं जिसे अर्जित या कमाना पड़ता है। धन को अर्जित करने में भी पुरूषार्थ करना पड़ता है जिससे दुःख होता है। फिर उस को व्यय करने में दुःख होता है। फिर भोग को प्राप्त करने में भी दुःख होता है और उसका परिणाम इन्द्रियों की शक्ति के क्षय होने व रोगों के कारण दुःख के रूप में सामने आता है। धन चोरी न हो जाये या कोई छीन न लें, इसके लिए धन की रक्षा करनी होती है जो कुछ परिस्थितियों में जान लेवा तक हो जाती है जिससे दुःख प्राप्त होता है। इस प्रकार से सुख की प्राप्ति में अनेक दुःख होते हैं। इसके विपरीत ईश्वर आनन्दस्वरूप है। वह सर्वव्यापक व निराकार होने से सबको सर्वत्र हर काल में प्राप्त है। उससे स्तुति-प्रार्थना-उपासना, यज्ञ-अग्निहोत्र एवं सत्कर्मों द्वारा जुड़ कर आत्मा में आनन्द का संचार होता है जो कि स्थाई सुख होता है। इसका परिणाम भी अच्छा होता है। ईश्वर की उपासना से ईश्वर का साक्षात्कार करना ही जीवात्मा व मनुष्य जीवन का उद्देश्य है। जो व्यक्ति ईश्वर की उपासना नहीं करता वह कृतघ्न होता है क्योंकि जिस ईश्वर ने हमारे सुख के लिए इस संसार व इसके समस्त पदार्थ बनाये हैं, हमें मनुष्य जन्म व माता-पिता, भाई-बहिन, मित्र व संबंधी दिए हैं, उसका उपकार न मानना व उसकी उपासना न करना कृतघ्नता है। इससे बड़ा पाप व दुष्कर्म और कुछ हो ही नहीं सकता। वेदों का ज्ञान सत्य है, इसका प्रमाण हमारे प्राचीन व अर्वाचीन ऋषि-मुनियों व योगियों द्वारा साधना करने के बाद वेदज्ञान का सही पाया जाना है। महर्षि दयानन्द स्वयं एक महान ऋषि व योगी थे और उन्होंने अपने सभी ग्रन्थों में वेदों के ईश्वरीय व सत्य होने के कारण इसको स्वतः प्रमाण मानना है। वेदों में जिस वैदिक संस्कृत भाषा का प्रयोग किया गया है वह आज भी सर्वोत्तम व वैज्ञानिक है। संसार की कोई भाषा गुणवत्ता में इसके समकक्ष नहीं है। चिन्तन, विचार, तर्क व प्रमाणों से यह सिद्ध हुआ है कि मनुष्य स्वयं भाषा का निर्माण नहीं कर सकते। इसके लिए उसे ईश्वर जैसी दिव्य सत्ता की अपेक्षा होती है। जिस प्रकार से मनुष्य को मानव शरीर व संसार के पृथिवी, सूर्य, चन्द्र व पृथिवीस्थ सभी पदार्थ अपौरूषेय सत्ता ईश्वर ने प्रदान किये हैं उसी प्रकार से वैदिक संस्कृत भाषा भी ईश्वर की ही देन है। आज संसार में जितनी भी भाषायें हैं, वह सब भौगोलिक कारणों व वैदिक संस्कृत भाषा में अपभ्रंश व विकारों से ही अस्तित्व में आई हैं। भाषा की दृष्टि व प्राचीनता की दृष्टि से भी वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान सिद्ध होते हैं। अतः वेदों को ज्ञान व विज्ञान का आदि व प्राचीनतम मूल भण्डार स्वीकार करना प्रत्येक विश्ववासी का कर्तव्य है। हमने अपने ज्ञान, अनुभव तथा लेख के विषय के अनुरूप अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। इसका मूल्यांकन प्रबुद्ध विज्ञ-पाठकों व विद्वानों द्वारा ही सम्भव है।

वैदिक सत्संग का आयोजन

आर्यसमाज तिलक नगर रोहतक दिनांक 30 व 31 जुलाई 2014 को वैदिक सत्संग का आयोजन कर रहा है जिसमें मुख्यवक्ता डॉ० धर्मवीर जी, प्रधान परोपकारिणी सभा, अजमेर होंगे। कार्यक्रम का समय सुबह 7 से 9.30 बजे तक व सायं 4 बजे से 7 बजे का होगा।

निवेदक :

सुभाष सांगवान, मंत्री आर्यसमाज तिलक नगर, रोहतक

फोन : 9366258105, 9729213111

thearyasamaj.org

कविता : दशोत्थान

मेरी कविता तुम गीत उन्हीं के गाना।

जो माटी के संग माटी बन, माटी से सोना उपजाते।
जो फूलों के संग में खिलते, कोयल-संग गीत गाते।
तुम कृषक श्रमिक को अपना ध्येय बनाना। मेरी कविता..... ॥
जो सीमा पर पहरुए बने करते हैं देश की रखवाली।
जो अपने लाल रक्त से रखते हैं देश की लाली।
जिनको आता है रिपु का दिल दहलाना। मेरी कविता..... ॥
जो शत्रु के हैं शत्रु मीत मित्रों के।
जो भाग्य-विधाता गीत प्रीत चित्रों के।
उन लाल लाड़लों को तुम लाड़ लड़ाना। मेरी कविता..... ॥
जो कर्मठता की सुधा को अहर्निश पीते।
जो यश शरीर से मरणान्तर भी जीते।
आदर्श जिन्हों के अपनाते हैं जन-जन।
जिनका जगती में सफल है आना-जाना। मेरी कविता..... ॥
जिनकी कृतियों में स्वर संसार सजा है।
जिनकी ध्वनियों में तार का तार बजा है।
जो मस्त रहे हर काल कला-संस्कृति में,
सजी है उसी में जिसमें प्रभु की रजा है।
नित नवल बनाते हैं जो भाव पुराना। मेरी कविता..... ॥
जो नारी देह में भी साहस की प्रतिभा।
जिनके तप-त्याग बने अतीत की गरिमा।
उन्नति के शिखरों ने भी गाई महिमा।
जो सदी सहस्राब्दी का बने तराना। मेरी कविता..... ॥
वे पत्थर जो विकास की नींव में सोए।
श्रम स्वेद सीकरों से प्रत्यंग भिगोए।
जिनके बलिदानों की गुमसुम है गाथा,
न चिता पर मेले लगे नहीं जन रोए।
उन अनचिह्नों की लुप्त कथा दोहराना। मेरी कविता..... ॥
जो त्रस्त अभावों से समृद्ध भावों से।
उर क्षत-विक्षत जिनका अविरत घावों से।
जो श्रम के बीज सतत धरणी पर बोते।
फिर भी देती न जिनको धरा ठिकाना। मेरी कविता..... ॥
समय नहीं इन्तजार करता। चला जाता है डग भरता॥
समय तो बहता दरिया है। समय को किसने रोका है॥

—डॉ० कुमारी सुशीला आर्या, सुख-निवास, चम्पापुरी, चरखी दादरी-127306 जिला भिवानी (हरयाणा)

आर्यसमाज 'शहर' बड़ा बाजार, सोनीपत का निर्वाचन

संरक्षक-श्री ईश्वरदत्त बुधीजा, प्रधान-श्री सुभाष चांदना, उपप्रधान-श्री दिनेश आर्य, श्री वेदप्रकाश आर्य, श्री सुदर्शन आर्य, मन्त्री-श्री प्रवीण आर्य, उपमंत्री-श्री रवीन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री दीपक तलवाड़, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री वेदपाल आर्य, आर्यवीर अधिष्ठाता-श्री श्यामलाल आर्य, वेदप्रचार अधिष्ठाता-मनोहर लाल सपड़ा, अन्तरंग सभासद-श्री ओमप्रकाश आर्य, लेखा परीक्षक-श्री नित्यप्रिय आर्य।

—श्री प्रवीण आर्य, मन्त्री 9992768483

शान्ति-यज्ञ सम्पन्न

दिनांक 1.7.14 को रीड़ की हड्डी में कैंसर होने के कारण ग्राम कंवारी (हिसार) में श्री बलवीर दुहन का निधन हो गया। दाह-संस्कार पर सैकड़ों लोग उपस्थित थे। वह अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गया। 7.7.2014 को श्री कैलाशचन्द्र शास्त्री दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार द्वारा शान्तियज्ञ किया गया। शास्त्री जी ने आत्मा-परमात्मा पर विचार रखे तथा यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म बताया। वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने जन्म और मृत्यु पर प्रकाश डाला। उपस्थित नर-नारियों ने दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी।

इस अवसर पर चतरसिंह आर्य, दरियासिंह ढिल्लो, धूपसिंह पूर्व सरपंच, शमशेर आर्य जिला परिषद्, नफेसिंह दुहन, दिलबागसिंह दुहन, सूबेसिंह दुहन, आजादसिंह दुहन, प्रद्युम्न दुहन, श्री मा० शेरसिंह प्रधान जिला किसान सभा, सूबेदार हरिसिंह आर्य सरसाना, श्री दरियावसिंह आर्य तलवण्डी रुका, कर्णसिंह सांगवान रासीवास, चौ० कपूरसिंह हाबड़ा, जिलेसिंह आदि उपस्थित थे। महिलाओं की हाजिरी भी अच्छी थी।

—सुनील दुहन, कंवारी (हिसार)

निमन्त्रण-पत्र

सेवा में,

माननीय प्रधान/मन्त्री जी,
मान्यवर, समस्त आर्यसमाज हरयाणा

आप को सूचित किया जाता है कि **27 जुलाई 2014 रविवार को नई अनाजमण्डी जीन्द में महान् गोभक्त चौ० हरफूल जाट जुलानी वाले का 78वाँ बलिदान दिवस हरियाणा गोशाला संघ व गोरक्षा दल हरियाणा के तत्त्वावधान में पहली बार बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है।** इस सम्मेलन की अध्यक्षता परम गोभक्त **पूज्य आचार्य बलदेव जी** प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली तथा मुख्य अतिथि **पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज** होंगे।

प्रदेश में गोहत्थे तोड़ने या 1967 के गोरक्षा आन्दोलन में कुर्बानी देने की बात हो, आर्यसमाज की उसमें अहम् भूमिका रही है। इसलिए आपसे अपील की जाती है कि अपनी आर्यसमाज से कम से कम एक वाहन लेकर इस सम्मेलन में अवश्य पहुंचने का कष्ट करें।

निवेदक :

(आचार्य विजयपाल) सभा-प्रधान

(रामपाल आर्य) सभा-मन्त्री

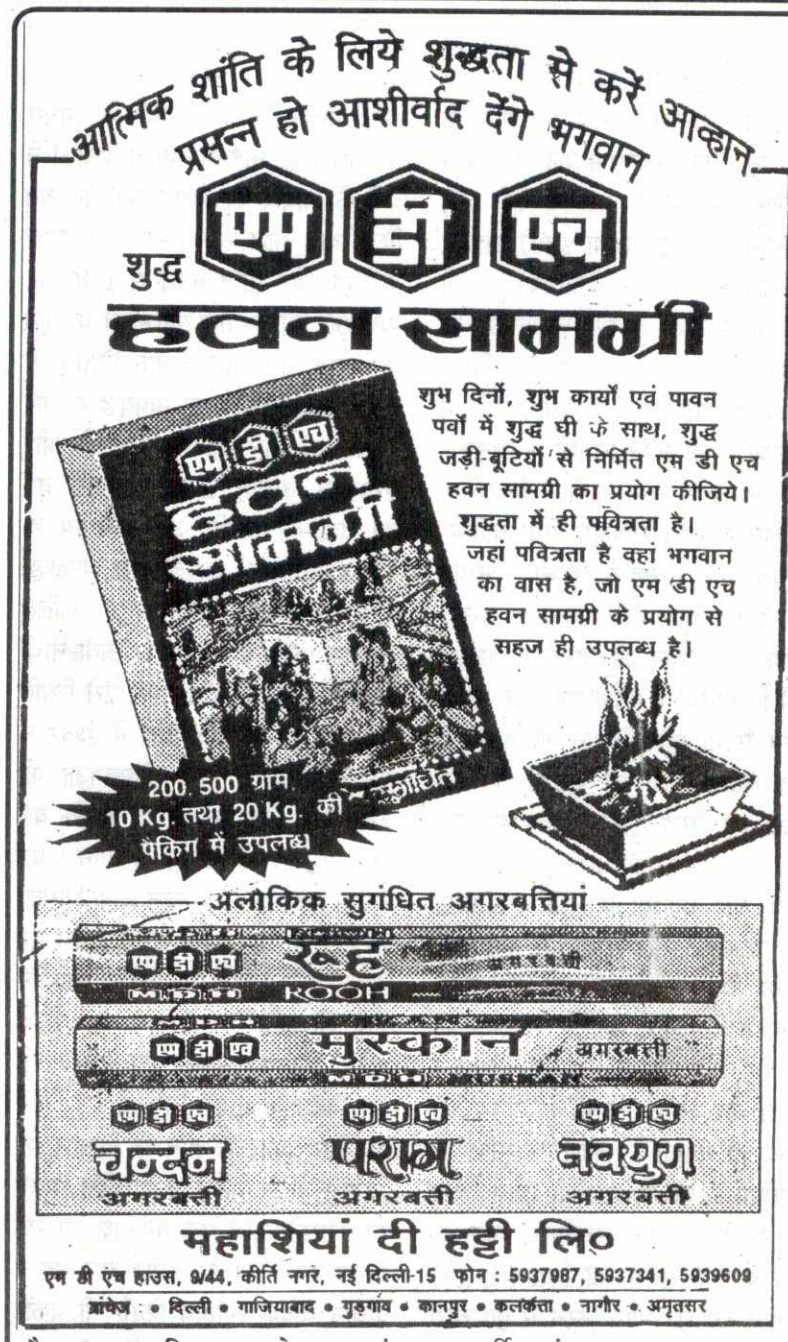

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

thearyasamaj.org

गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा गांवों में सघन वेदप्रचार एवं युवा निर्माण कार्यक्रम

मानव-जीवन को पाने का मुख्य उद्देश्य सुख की प्राप्ति ही है। सुख का आधार धर्म को माना गया है। धर्म को जानने का आधार ग्रन्थ वेद ही हैं। जब तक आर्यावर्त सहित सम्पूर्ण विश्व में वेद आधारित आचार, विचार, व्यवहार प्रचलित रहा तब तक मानव जीवन सुखी और समृद्धि से युक्त रहा। जिस प्रकार मूल के नष्ट होने पर वृक्ष की शाखा, प्रशाखा, पत्र, पुष्प एवं फल सब नष्ट हो जाते हैं, वैसा ही कारण आचार की मौलिक शिक्षा देने वाले वेदरूपी मूल को छाड़ने से मानव जाति का हुआ है। परिष्कृत विचारों की न्यूनता के कारण आर्यावर्त देश में आत्मा को विचलित करने वाली घटनाओं का कर्णपात होने पर मन विह्वल हो उठता है। काश! अब भी यदि युगद्रष्टा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रदर्शित वेद-पथ के पथिक बनकर कार्य किया जाये तो शीघ्र ही आर्यावर्त देश वेद की पावन ऋचाओं से गुंजायमान होकर वेदपथ का अनुगामी होने से सुख एवं आनन्द की वर्षा से आह्लादित हो सकेगा।

किसी कवि ने प्रतिबद्धता से काम करने वालों के लिए बहुत ही सुन्दर पंक्तियां लिखी हैं—

बहादुर कब किसी का
आसरा अहसान लेते हैं।
उसी को कर गुजरते हैं
जो मन में ठान लेते हैं॥

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी की तप:स्थली विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र का शताब्दी वर्ष मनाया गया। इस अवसर पर बहुत से गणमान्य आर्य विद्वानों एवं राजनेताओं ने आकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। आबालवृद्ध वनिता ने पूर्णोल्लास के साथ कार्यक्रम का आनन्द लेते हुए ज्ञानगंगा में स्नान किया। कार्यक्रम की सफलता के बाद भी गुरुकुल के यशस्वी प्राचार्य आचार्य देवव्रत जी के मानस में चिन्तन की रेखायें निरन्तर बनती रही। इस शताब्दी वर्ष से हम कौन-सा ऐसा कार्य प्रारम्भ करें जिससे महर्षि सहित नाम अनाम वाले उन महानुभावों को सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सके और ऋषि ऋण से अनृण होने का काम भी हो सके। विचारों की इस शृंखला में आप के मन ने अनायास ही आपके पास कभी आये एक पिता के अपने पुत्र के बिगड़ रहे संस्कारों से पीड़ित उस पिता की पीड़ा को मानस पटल पर उत्कीर्ण कर दिया और आपने निश्चय किया कि जिस प्रकार हम अपने गुरुकुलीय छात्रों के भविष्य का निर्माण अच्छी शिक्षा एवं संस्कारों से कर रहे हैं वैसा ही कार्य गांवों में संस्कार से दूर हो रहे छात्रों का योग एवं चरित्र निर्माण शिविरों से क्यों न किया जाये। विचार का यह बीज आचार्य देवव्रत जी के मानस में अंकुरित, पुष्पित, पल्लवित हो कर्म-फल प्रदान करने लगा है।

02 अक्तूबर 2012 का वह दिन गुरुकुल के इतिहास में अंकित हो गया जब युवाओं के लिए योग एवं युवा चरित्र निर्माण शिविर प्रारम्भ हुआ। गुरुकुलीय शिक्षेतर वेदप्रचार का यह कार्य लाडवा खण्ड के गाँव बपदी से प्रारम्भ होकर अब तक लगभग 150 गाँवों तक विस्तृत हो चुका है। इन गाँवों में लगभग डेढ़ लाख बालक-बालिकायें अपनी प्रतिभागिता कर चुके हैं।

इन शिविरों का मुख्य उद्देश्य जहां अपनी वैदिक शिक्षा से युवा-युवतियों को शराब, मांस, बीड़ी, तम्बाकू आदि नशों से दूर कर संस्कारक्षम करना है, वहीं वेद के विचार को जन-जन तक पहुँचाना है। सार्वदेशिक आर्य वीरदल के वरिष्ठ एवं सुयोग्य व्यायाम शिक्षक श्री धर्मवीर आर्य जी, श्री समरपाल आर्य जी एवं सहयोगी श्री धर्मेन्द्र आर्य, श्री सचिन आर्य, श्री रवि आर्य के सहयोग से प्रत्येक गांव में 7 से 10 दिवसात्मक शिविर लगाये जाते हैं। प्रात: एवं सायंकाल युवाओं को व्यायाम प्रशिक्षण के साथ वैदिक विचारों का श्रवण एवं शंका-समाधान। अतिरिक्त समय में प्रौढ़ महिला, पुरुषों के लिए योग, प्राणायाम एवं वैदिक विचारों का उपदेश किया जाता है। रात्रिकाल में गाँव की चौपाल में भजनोपदेश का कार्यक्रम किया जाता है। गांवों में लगने वाले इन शिविरों के समापन समारोह में आचार्य देवव्रत जी एवं प्रधान श्री कुलवन्त सैनी जी स्वयं उपस्थित होकर बालकों, अभिभावकों, आचार्यों का उत्साहवर्धन करते हैं। गत वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में चार दिवसीय वेदप्रचार यात्रा का आयोजन किया गया। इस यात्रा में स्वामी ब्रह्मानन्द जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वर्तमान महामंत्री मास्टर रामपाल आर्य जी, श्री संजीव आर्य जी उपस्थित रहे। 30 गाँवों में इस वेदप्रचार यात्रा का व्यापक प्रभाव रहा। 16 फरवरी 2014 को लाडवा खण्ड के 65 गांवों का सामूहिक कार्यक्रम लाडवा की अनाज मण्डी में किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग चार हजार आर्यवीर एवं आर्य वीरांगनाओं ने उपस्थिज्ञत होकर सामूहिक व्यायाम प्रदर्शन एवं गीत आदि प्रस्तुत किये एवं आचार्य बलदेव जी, मा० रामपाल जी, आचार्य देवव्रत जी का उद्बोधन हुआ।

गत दो वर्षों से गुरुकुल के पावन परिसर में युवाओं को संस्कारित करने के लिए योग एवं युवा चरित्र-निर्माण का आयोजन जून मास में किया जा रहा है। इस वर्ष जून मास में आर्यवीर एवं आर्य वीरांगना शिविर में क्रमश: 680 एवं 350 आर्यवीर एवं आर्यवीरांगनाओं ने प्रतिभागिता की। लगभग 50 वरिष्ठ आर्यवीरों को तीन मास का आर्य, वैदिक सिद्धान्तों एवं व्यायाम का विशेष प्रशिक्षण देकर कार्यक्षेत्र में भेजा जाएगा। कुरुक्षेत्र जनपद के सभी छ: विकास खण्डों में छ:-छ: प्रशिक्षक नियुक्त किये जायेंगे जिससे चरित्र निर्माण एवं वेदप्रचार के कार्यक्रम को सही गति प्राप्त हो सके। शिविर के समापन पर लाडवा के खण्ड शिक्षा अधिकारी श्री राजेन्द्र भारद्वाज ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा था कि जब से गुरुकुल की ओर से युवाओं के योग एवं चरित्र निर्माण के शिविरों का आयोजन गांवों में किया जा रहा है उन गांवों का शिक्षा स्तर के और विकास खण्डों की अपेक्षा अधिक हुई है, अनुशासन में वृद्धि हुई है साथ ही खेलों में भी छात्रों का वर्चस्व बढ़ा है।

विशाल हृदय करके आचार्य देवव्रत जी एवं गुरुकुल प्रबन्ध समिति के प्रधान कुलवन्त जी सैनी ने लगभग 30 लाख रुपये की वार्षिक राशि व्यय करने का संकल्प लिया है। यह राशि कार्य बढ़ने के साथ निरन्तर बढ़ती रहेगी।

समस्त आर्य जनता को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा खरखौदा में आयोजित आर्य सम्मेलन में सभाप्रधान जी ने घोषणा की कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र के द्वारा चलाये जा रहे इस प्रकार के कार्यक्रम को सम्पूर्ण हरियाणा में सभा द्वारा संचालित किया जाएगा।

हम सब आर्यों का एक ही उद्देश्य है दिव्य और भव्य आर्यावर्त का निर्माण करना। ऋषिवर देव दयानन्द जी द्वारा जुलाई इस दिव्य ज्योति को निरन्तर प्रचार-प्रसार के माध्यम से वेदों की उच्च शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचायें। जहाँ हम हैं वहीं से कार्य प्रारम्भ करें, हमारी प्रेरणाओं के स्रोत स्वयं ईश्वरीय वाणी वेद, सत्यार्थप्रकाश, स्वामी दयानन्द जी का जीवन एवं पूर्व के आर्य हैं।

—नन्दकिशोर आर्य, संस्कृत प्राध्यापक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

तम्बाकू उत्पादों पर अधिक कर से इसका सेवन घटेगा तथा कैंसर रोगियों की संख्या घटेगी

कोटा, 10 जुलाई। आज लोकसभा में प्रस्तुत हुए आम बजट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि यह आम आदमी का बजट है इसमें आम आदमी की जरूरतों का ध्यान रखा गया और सुविधाएं दी गई। विलासिता की चीजों को महंगा किया गया। महिलाओं व वरिष्ठ नागरिकों को कर में अधिक छूट देकर उन्हें लाभान्वित किया है।

तम्बाकू उत्पादों, सिगरेट, गुटका आदि पर अधिक कर लगाकर सरकार ने दोहरा फायदा पहुंचाया है। एक तो तम्बाकू जनित उत्पादों पर अधिक कर लगाकर बिक्री में कमी व तम्बाकू जनित उत्पादनों के सेवन से होने वाले रोगों में कमी होगी। कैंसर रोग मृत्यु दर में कमी होगी, दूसरा कैंसर रोगियों पर भारी खर्चे में भी सरकार को बचत होगी।

एक हेल्थ सर्वे के आंकड़े के अनुसार

1. अभी भारत में तम्बाकू उत्पादों के सेवन से हर वर्ष 2200 लोगों की मृत्यु होती है। 2. 50 प्रतिशत कैंसर पीड़ित तम्बाकू का सेवन करने वाले। 3. विश्व में तम्बाकू उत्पादों को सर्वाधिक खपत में भारत दूसरे स्थान पर है।

पिछले कुछ वर्षों में तम्बाकू जनित उत्पादन का सेवन टीनेजर व महिलाओं व पुरूषों में बढ़ा है। तम्बाकू उत्पादों के सेवन से बचाव हेतु और अधिक जनजागरण अभियान चलाकर कैंसर रोग व इससे उत्पन्न अन्य बीमारियों से लोगों को बचाया जा सकता है।

श्री मोदी सरकार विशेषकर वित्तमंत्री श्री अरुण जेटली को हार्दिक बधाई जो उन्होंने आम बजट में तम्बाकू उत्पादों पर अधिक कर लगाकर इसकी बिक्री कम करने का सार्थक प्रयास किया है।

-अर्जुनदेव चड्ढा, जिला प्रधान, कोटा

thearyasamaj.org

मानव-मात्र का धर्म एक—सम्प्रदाय अनेक

जिस परमात्मा ने मनुष्यों को आंखें आदि इन्द्रियों के लिये सूर्यादि सहायक पदार्थ पैदा किये हैं। यह हो ही नहीं सकता कि परमात्मा ने मनुष्य के मस्तिष्क को उज्ज्वल और उन्नत करने के लिए ज्ञान न दिया हो। वह है वेद का ज्ञान। महर्षि दयानन्द ने वेदज्ञान के प्रसार एवं प्रचार के लिए 1875 में मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी।

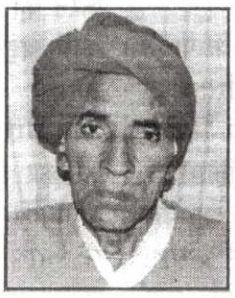

एक दिन अमृतसर में पारकिंसन साहब कमिश्नर ने स्वामी दयानन्द से प्रश्न किया कि आप किस प्रकार के धर्म का प्रचार करना चाहते हैं? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि हम केवल यह चाहते हैं कि लोग वेदों की आज्ञाओं का पालन करें और केवल निराकार अद्वितीय परमेश्वर की पूजा और उपासना करें। क्योंकि—

वेद का ही धर्म इक,
सच्चा सनातन धर्म है।
वेद के अनुकूल जो हो,
कर्म सच्चा कर्म है॥
वेद का ही सच्चा ज्ञान है
भगवान का।
हो सदा कल्याण इससे
विश्व के इंसान का॥

वेद विद्या से ही अज्ञान का नाश होता है। कोई भी व्यक्ति कितना ही रूपवान, धनवान एवं शारीरिक दृष्टि से हृष्ट-पुष्ट क्यों न हो, यदि वह विद्यारूपी आभूषण से वंचित है तो बाकी सारे गुण व्यर्थ हैं। वैदिक शिक्षा ऐसा वरदान है जो मानव समाज को आदर्श समाज बनाने का एकमात्र साधन एवं सीढ़ी है। शरीर की बाहरी सुन्दरता एक धोखा है। अन्दर सभी के कूड़ा-कचरा भरा हुआ है। जिसका आचरण अच्छा है, विचार अच्छे हैं, वे ही वास्तव में सुन्दर और प्रशंसा के योग्य हैं।

कितना ही अच्छा धर्म क्यों न हो जब तक उसके नियमों व सिद्धान्तों को अपने जीवन में धारण करके दिखाने वाले लोग नहीं होंगे तब तक वह धर्म उन्नति नहीं कर सकता।

स्वाध्याय और सत्संग हमारे सच्चे मित्र हैं। वैदिक संस्कृति रूपी भवन के चार स्तम्भ हैं—

(1) ईश्वर व वेदवाणी में सत्य विश्वास।

(2) गोवंश की वृद्धि।

(3) यज्ञ एवं योग (योग के आठ अंग)।

(4) वर्णाश्रम व्यवस्था का परिपालन।

जिन मनुष्यों में न कोई विद्या है, न विद्या प्राप्त करने के लिए तपस्या करते हैं, न दान देने की प्रवृत्ति है, न ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा है, न सरल स्वभाव है, न जीवन में और कोई उत्तम गुण है, न धर्मयुक्त व्यवहार करते हैं। ऐसे मनुष्य तो धरती पर भार बनकर पशु समान खाते-पीते हुए जीवन को नष्ट कर रहे हैं।

स्वार्थी दोषं न पश्यति-जो स्वार्थ साधने में तत्पर हैं, वे अपने दोषों पर ध्यान नहीं देते। अत: दोष निवारण का सरल उपाय तन, मन, धन परोपकार में लगायें। जो धर्मयुक्त व्यवहार में ठीक-ठीक वर्तता है, उसको सदा सर्वत्र लाभ और जो विपरीत वर्तता है वह सदा दु:खी होकर अपनी हानि कर लेता है।

धर्म तो पक्षपात रहित, न्यायाचरण, सत्य का ग्रहण असत्य का परित्याग, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञापालन, परोपकार, सत्यभाषणादि लक्षण सब आश्रमियों का अर्थात् सब मनुष्य मात्र का एक ही है।

किसी मनुष्य को केवल परमेश्वर की स्तुतिमात्र ही करने से सन्तोष न करना चाहिये किन्तु उसी की आज्ञा में रहकर और ऐसा समझकर कि परमेश्वर मुझे सब जगह देखता है इसलिए अधर्म को छोड़कर और परमेश्वर के सहाय की इच्छा करके मनुष्य को सदा उद्योग में वर्तमान रहना चाहिये। ईश्वर जीव के लिये उपदेश करता है कि हे मनुष्य तू जब तक विद्या में वृद्धि होकर अच्छी प्रकार परोपकार न करेगा तब तक तुझ को मनुष्यपन और सर्वोत्तम सुख की प्राप्ति कभी नहीं होगी। इससे तू परोपकार करने वाला सदा हो। मनुष्यों को चाहिये उसी की स्तुति करे जो प्रशंसित कर्म करे और उसी की निन्दा करे तो निन्दित कर्म का आचरण करे। वही स्तुति है जो सत्य कहना और वही निन्दा है जो किसी के विषय में झूठ बकना।

सत्य से अधिक धन नहीं और झूठ के बराबर दूसरा पाप नहीं। क्योंकि सत्य ही धर्म का आधार है। अत: सत्य का लोप कभी नहीं करना चाहिये।

आज जमाना बदल चुका है,
सत्य को वह भूल चुका है।
सत्य की शक्ति बहुत बड़ी है,
पर स्वर्ग के नीचे दबी पड़ी है॥

धर्महीना पशुभि समाना-धर्म से रहित आदमी पशु के समान होता है। धर्म मनुष्य और पशु में अन्तर करता है। धर्म मनुष्य को पशुता से मानवता की ओर प्रेरित करता है। धर्म और सम्प्रदाय में फर्क है। धर्म परमात्मा का बनाया गया वैदिक धर्म है, जबकि मत या सम्प्रदाय मनुष्यों द्वारा संचालित होते हैं, जिनको आज लोगों ने धर्म की संज्ञा दे डाली है। यही मनुष्य की गिरावट का कारण है। धर्म जोड़ता है जबकि मत व सम्प्रदाय तोड़ते हैं। धर्म भाईचारा, प्रेम, सहयोग, जीओ और जीने दो का भाव जाग्रत करता है। मत या सम्प्रदाय आदमी आदमी के बीच दीवार खड़ी करते हैं। धर्म आपस में जोड़ता है। सम्प्रदाय विवाद व झगड़े खड़े करते हैं।

आज लोगों ने सम्प्रदायों को ही धर्म मान लिया है। सम्प्रदाय कभी भी धर्म नहीं होते हैं। धर्म तो पूरे संसार के व्यक्तियों का एक ही होता है, सम्प्रदाय अनेक होते हैं। धर्माचरण से मनुष्य फलता-फूलता है और सुखी रहता है। जो धर्म को छोड़ देता है धर्म उसे छोड़ देता है। धर्म से विहीन व्यक्ति का विनाश हो जाता है। कौरवों ने धर्म-मर्यादा को छोड़ा, वे समूल नष्ट हो गये। रावण ने धर्म मर्यादा को तोड़ा तो विनाश को प्राप्त हुआ। महाभारत का युद्ध धर्म-अधर्म, न्याय-अन्याय और सत्य असत्य का था। अन्तिम विजय धर्म की ही मानी गई है। आज धर्म आचरण से दूर हो रहा है। कथनी और करनी में फासला बढ़ा रहा है। इसीलिये आज संसार में दु:ख एवं अशान्ति के कारण संसार में बुराइयां बढ़ती जा रही हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने बुराइयों का समाधान किया है—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। इसलिए जो उन्नति करना चाहते हो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ भी हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिलकर करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं।

भेंटकर्त्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य सेवक
आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

सम्मानित पाठक कृपया ध्यान दें...

यदि 'आर्य प्रतिनिधि' न मिले तो...

सम्मानित सदस्यो! **'आर्य प्रतिनिधि'** आपकी सेवा में प्रत्येक माह की 7, 14, 21, 28 तारीख को प्रेषित किया जाता है। दस दिन तक न मिलने पर कृपया दूरभाष पर अवगत कराएं, पुन: प्रेषित किया जायेगा। कहीं-कहीं से ऐसी शिकायतें भी मिलती हैं कि उन्हें **'आर्य प्रतिनिधि'** लम्बे समय से नहीं मिला है या सदस्यता सहयोग दिये जाने के बाद भी नहीं मिल रहा है, तो इस विषय में रोहतक कार्यालय से दूरभाष पर पुष्टि करने के बाद कृपया सम्बन्धित डाकघर के पोस्टमास्टर अथवा सम्भव हो तो प्रवर अधीक्षक डाकघर-संबंधित प्रखण्ड से भी इसकी शिकायत करें। हम तो, अपने स्तर पर समुचित कार्यवाही करेंगे ही, ताकि आपको **'आर्य प्रतिनिधि'** यथासमय मिलता रहे और डाक के वितरण में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न हो।

सम्पादक-'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक फोन : 01262-216222, मो० 7206865945

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।